श्रीमद् मघवा समवसरण में मनाया महाप्रज्ञ का 79वां दीक्षा दिवस समारोह

व्रत की चेतना जगाएं : आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 5 फरवरी।

तेरापंथ के दशमाधिशास्ता राष्ट्रसंत, लोकमहर्षि आचार्य महाप्रज्ञ का 79वां दीक्षा दिवस बीदासर के श्रीमद् मघवा समवरण में युवादिवस के रूप में भव्य समारोह पुर्वक मनाया गया।

अपने संयम पर्याय के 79वें वर्ष में प्रवेश पर आयोजित समारोह में विशाल जनमेदनी को सम्बोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि जैन साहित्य और वैदिक साहित्य में दीक्षा को बहुत महत्त्व दिया गया है, जीवन में किसी को अदीक्षित नहीं रहना चाहिये, जिनके जीवन में कोई व्रत और कोई नियम नहीं होता वे अपने लिये खतरों को न्योता देते हैं। जो ज्ञानी नहीं है वह सदा सोया रहता है जो नियमों में जीता है वह सोता हुआ भी जागृत रहता है। मैंने भी माद्य शुक्ला दशमी के दिन व्रत लिया, यह मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे महान आचार्य कालूगणी का साया मिला, गांव के माहौल में पलने के बावजूद गुरु की औपा का ही प्रतिफल है कि मैं आज इस मंजिल तक पहुंच पाया हूं। आचार्य महाप्रज्ञ का मानना था कि तेरापंथ ध्र्मासंघ में अनुशासन, अनेकांत, विकास, नया चिंतन और नई कल्पना है ऐसे धर्मसंघ में दीक्षित होना आज के इस भौतिकवादी युग में सौभाग्य की बात हे। आचार्य ने अपने विकास के सूत्रों की व्याख्या करते हुए कहा - जिस पौधे को उपयुक्त सिंचन मिलता रहता है वह पनप जाता है, मैंने आचार्यश्री कालूगणी के नेतृत्व और तुलसी के कठोर अनुशासन में जीवन बिताया और मेरी इसी प्रवृत्ति ने मेरे लिये विकास के द्वार खोल दिये। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने संदेश में कहा कि हर व्यक्ति को व्रत दीक्षा लेनी चाहिये, समाज में अगर बारह व्रतों की दीक्षा के प्रति रूझान बढ़े तो आर्थिक मंदी सहित कई समस्याओं से निजात पाया जा सकता है।

वर्धापना के क्षणों को समूचे धर्मसंघ के लिए प्रसन्नता का क्षण बताते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कहा - वह व्यक्ति सचमुच धन्य होते हैं जो बचपन में ही सन्यास स्वीऔत कर लेते हैं। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने शेशव अवस्था में ही आचार्य कालुगणी के हाथ खुद को समर्पित कर दिया। युवाचार्य महाश्रमण ने कहा - साधु बनने के बाद साधना में सफलता प्राप्त कर लेना और सबके लिये उपयोगी बन जाना महापुरूषों का सर्वश्रेष्ठ लक्षण है। युवाचार्य श्री ने युवा दिवस पर कहा कि युवा पीढी में व्रत की चेतना जागे और अध्यात्म के प्रति रूझान बढे यही सबसे बड़ा उपहार होगा। साथ ही युवा मनीषी ने आचार्य महाप्रज्ञ के 79वें दीक्षा दिवस को तेरापंथ धर्मसंघ के मुनियों में अब तक सर्वोत्औष्ट संयम पर्याय होने का उल्लेख करते हुए एक रिकॉर्ड बताया। युवाचार्यश्री ने आचार्य प्रवर के प्रति लंबी उम्र तक स्वस्थ रहते हुए धर्मसंघ में अनुशासन करते रहने की मंगल कामना की।

इस अवसर पर मुनि श्रेयांस कुमार, मुनि विजय कुमार, साध्वी कल्याणयशा, तरूणप्रभा, गवेषणाश्री, मधुस्मिता, मृदुप्रभा, नितीन नखत, श्रीमती सरोज दुगड़ ने भावपूर्ण गीतों, विचारों और कविताओं से आराध्य की वर्धापना की। मंच संचालन मुनि हिमांशु कुमार ने किया।

अहिंसा प्रशिक्षण शिविर 7 को

बीदासर 5 फरवरी।

स्थानीय तेरापंथ भवन के श्रीमद मघवा समवरण में अणुव्रत समिति बीदासर के तत्वाधान में 7 फरवरी को 1 दिवसीय अहिंसा प्रि-िक्षण शिविर लगाया जायेगा।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान हिंसात्मक वातावरण में अहिंसा का प्रशिक्षण सामायिक एवं महत्त्वपूर्ण प्रयास है। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष चौथमल बोथरा ने बताया कि इस शिविर में देश के विभिन्न भागों से समागत संतों का मार्गदर्शन होगा।

- अशोक सियोल